ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 38 कुल पृष्ठ-8 25 से 31 जुलाई, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 आ. शु.-14

आर्यों पर तथा भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करने वाले

'लीला सीरियल' को अविलम्ब बन्द किया जाये

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की सरकार से जोरदार अपील

प्रसिद्ध पत्रकार तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री एम.जे. अकबर के बेटे श्री प्रयाग अकबर द्वारा लिखित पुस्तक के आधार पर 'लीला' नाम से एक ऑनलाइन सीरियल तैयार किया गया जिसे एक अमेरिकन कम्पनी द्वारा तैयार कर दिखाया जा रहा है। इस सीरियल में जो विवरण दिखाया जा रहा है उसका अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि इस सीरियल में दिये गये विवरण बिल्कुल झूठ पर आधारित है तथा इसमें आर्यों को और भारतीय संस्कृति को अत्यन्त निचले स्तर का दिखाया गया है और तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर पूर्व नियोजित षड्यन्त्र के आधार पर भारतीय संस्कृति जो अत्यन्त उच्च आदर्शों को अपने में समेटे हुए है का अवमूल्यन करने का अत्यन्त घृणित प्रयास किया गया है। इस प्रकार का प्रयास अत्यन्त खतरनाक है और करोड़ों भारतीयों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला है। अतः आर्य समाज इस सीरियल को प्रतिबन्धित करने की माँग करता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी, भारत के गृहमंत्री श्री अमित शाह जी तथा केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री प्रकाश जावेड़कर जी को लिखा गया पत्र यहाँ अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी

प्रधानमंत्री, भारत सरकार

साउथ ब्लाक, नई दिल्ली–1

विषय : 'लीला' सीरियल के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध की माँग।

महोदय,

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। इस पत्र के माध्यम से आपके संज्ञान में उपरोक्त सीरियल के सम्बन्ध में जानकारी लाना चाहता हूँ कि श्री एम.जे. अकबर (प्रसिद्ध पत्रकार तथा आपकी पिछली केन्द्रीय सरकार में मंत्री रहे) के बेटे श्री प्रयाग अकबर द्वारा लिखित पुस्तक 'लीला' के आधार पर लीला नाम से एक ऑनलाईन सीरियल तैयार किया गया है जिसे

NETFLIX नामक ऑनलाईन वीडियो उपलब्ध कराने वाली एक अमेरिकन कम्पनी द्वारा निर्मित कर दिखाया जा रहा है। अभी तक इस सीरियल के 6 एपिसोड दिखाये जा चुके हैं।

इस सीरियल में 'आर्य' (हिन्दू) को बहुत ही अभद्र रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसमें जिस काल्पनिक राज्य का वर्णन किया गया है वह वास्तव में आर्यावर्त कहलाता है। इसमें दिखाया गया है कि इस काल्पनिक राज्य के निवासी आर्य बहुत ही झगड़ालू, असहिष्णु एवं आपराधिक प्रवृत्ति के हैं। वे अन्धविश्वासी हैं तथा बहुत सी गलत परम्पराओं का पालन करते हैं। इनकी महिलाओं की कुछ परिस्थितियों में कुत्तों के साथ शादी होती है। दूषक लोगों (दलित या शूद्र) को आर्यों द्वारा छोड़े हुए जूठन को अपने शरीर पर लगाने के लिए बाध्य किया जाता है। ब्राह्मणों का समाज पर पूरा नियंत्रण रहता है तथा वे उनके नियमों को न मानने वाले दूषकों एवं मुस्लिमों पर अत्याचार करते हैं। अपने समाज से बाहर शादी करने वाली महिलाओं के बच्चों का अपहरण कर लेते हैं तथा ऐसी महिलाओं को किसी निर्जन स्थान में बने हुए शुद्धि शिविरों में रखा जाता है। उन्हें मानसिक रूप से कमजोर करने के लिए उनके साथ मारपीट, दुव्यर्वहार तो एक सामान्य सी बात है, उन्हें ऐसी दवाईयाँ दी जाती हैं जिससे वे मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाती हैं। इस पूरी व्यवस्था को संभालने वाले जो प्रायः उच्च वर्ग के होते हैं वे ऐसी महिलाओं का शोषण भी करते हैं।

इस सीरियल में गाँधी और आर्यों को एक–दूसरे का विरोधी दिखाया गया है। कश्मीरी मुस्लिमों के साथ भी आर्यों का अच्छा व्यवहार नहीं है। दूषक लोगों को आजादी के नारे लगाते हुए दिखाया गया है। नक्सलियों के नारे भी दिखाये गये हैं। वैसे यह सब कल्पना पर आधारित कहानी है, किन्तु पूरी कल्पना आर्य धर्म के लोगों को ध्यान में रखकर की गई है जिसमें हिन्दुओं का उच्च वर्ग सारे अत्याचारों का जनक दियाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह पूरा सीरियल ही एक सोची–समझी साजिश के तहत हिन्दु धर्म के अनुयायियों को बदनाम करने के लिए बनाया गया है जिससे अन्य देशों में भारत एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध घृणा का वातावरण पैदा किया जा सके।

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आपसे अनुरोध है कि इस 'लीला' नामक सीरियल पर इसको दिखाने वाली NETFLIX नामक कम्पनी पर तथा इस प्रकार की पुस्तक पर भारत सरकार की ओर से तत्काल प्रतिबन्ध लगाया जाये। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर किसी को भी भारत, वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध षड्यन्त्र करने तथा करोड़ों हिन्दुओं की आस्था को ठेस पहुँचाने की अनुमति नहीं दी जा सकती और न ही दी जानी चाहिए। आशा है आप भारत सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में शीघ्र कार्यवाही करते हुए इस सीरियल को प्रतिबन्धित करने का आदेश जारी करेंगे। देश के करोड़ों आर्यों की आपसे यही अपेक्षा है। हमें पूरी आशा एवं विश्वास है कि आप इस विषय पर गम्भीरता के साथ कदम उठायेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)

सभा प्रधान

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

कैसे जियें तनावमुक्त जीवन?

– डॉ. विनोद गुप्ता

तनाव एक ऐसी मनःस्थिति है, जो हर पल मनुष्य को खाये रहती है लेकिन फिर भी उसका कहीं कोई समाधान नहीं होता, क्योंकि तनाव में व्यक्ति अपनी सूझ–बूझ और सोचने समझने की शक्ति खो देता है, उसे वहां से निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आता और इस तरह वह तनाव के दलदल में फंसता चला जाता है। जीवन संघर्ष का नाम है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में पग–पग पर चुनौतियाँ हैं, समस्याएं हैं, बाधाएं हैं, लेकिन तनाव पालने से क्या होगा? क्या वे समाप्त हो जायेंगी? तो फिर इन्हें लेकर आप तनाव क्यों पाले हुए हैं? यदि कोई समस्या हो तो उसका समाधान उसके निराकरण करने से ही होगा न कि तनाव पालने से। तनाव से समस्या और जटिल हो जाती है, अतः जीवन में आने वाली प्रत्येक कठिनाइयों, बाधाओं, चुनौतियों को सहज लें, उसे हौवा न बनाएं और न ही विचलित हों। फिर देखिए, कितनी जल्दी हल निकलता है।

आज की व्यस्त और भौतिकवादी जिंदगी में बच्चे, बूढ़े और जवां सभी तनाव में रहते हैं। उनके जीवन की शुरुआत तनाव से होती है और अंत भी उसी से होता है। यानि व्यक्ति ताउम्र किसी न किसी प्रकार के तनाव से घिरा रहता है। क्या व्यक्ति तनावमुक्त जीवन नहीं जी सकता? यदि आप कुछ बातों का ध्यान रखें, तो आप तनावमुक्त जीवन जी सकते हैं।

तनाव एक ऐसी मनःस्थिति है, जो हर पल मनुष्य को खाये रहती है लेकिन फिर भी उसका कहीं कोई समाधान नहीं होता, क्योंकि तनाव में व्यक्ति अपनी सूझ–बूझ और सोचने समझने की शक्ति खो देता है, उसे वहां से निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आता और इस तरह वह तनाव के दलदल में फंसता चला जाता है।

जीवन संघर्ष का नाम है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में पग–पग पर चुनौतियाँ हैं, समस्याएं हैं, बाधाएं हैं, लेकिन तनाव पालने से क्या होगा? क्या वे समाप्त हो जायेंगी? तो फिर इन्हें लेकर आप तनाव क्यों पाले हुए हैं? यदि कोई समस्या हो तो उसका समाधान उसके निराकरण करने से ही होगा न कि तनाव पालने से। तनाव से समस्या और जटिल हो जाती है, अतः जीवन में आने वाली प्रत्येक कठिनाइयों, बाधाओं, चुनौतियों को सहज लें, उसे हौवा न बनाएं और न ही विचलित हों। फिर देखिए, कितनी जल्दी हल निकलता है।

एक तनाव सौ रोगों को जन्म देता है। उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, सिरदर्द, मानसिक विकृति आदि अनेक गंभीर रोगों की जड़ तनाव ही होता है। इससे न केवल इन रोगों का जन्म होता है, अपितु उनकी तीव्रता भी बढ़ती है और वे जानलेवा साबित हो सकते हैं, अतः तनाव से बचना चाहिए। अत्यधिक तनाव पालने से मस्तिष्क की नसें फट सकती हैं, हृदयाघात हो सकता है और व्यक्ति की मौत हो सकती है।

अपनी कार्यक्षमता की सीमा का ध्यान रखकर ही कोई कार्य शुरू करें। अन्यथा समय नजदीक आ जायेगा और कार्य पूरा न होने पर आप तनावग्रस्त हो जायेंगे। इसलिए लक्ष्य वही निर्धारण करें जिसकी पूर्ति निर्धारित समय अवधि में पूरी हो सकती हो।

अपने को प्रकृति से जोड़ें। सुबह जल्दी उठकर सूर्योदय के दर्शन करें तथा घूमने जायें। घूमने के लिए वह स्थान चुने जहाँ हरियाली हो। इसके अलावा प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थान जैसे नदी, तालाब, झरने, समुद्र, पहाड़, बाग–बगीचों में घूमने से भी मन को शांति और सुकून मिलता है तथा तनाव दूर होता है।

संगीत जहां सुनने में कर्णप्रिय होता है वहीं वह एक औषधि का कार्य भी करता है मधुर संगीत को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। सुबह और रात को आधा घंटा पसंदीदा धीमी आवाज में सुनें। इससे आप तनावमुक्त रहेंगे।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए आपको महत्त्वाकांक्षी होना तो जरूर है लेकिन अति महत्त्वाकांक्षा पालने में आपको तनाव के सिवाय और कुछ हासिल नहीं होगा। इसलिए प्रतिस्पर्धा करें, लेकिन वह स्वस्थ हो। अनुचित तरीके से की गई प्रतिद्वंदिता आपको तनाव में डाल देगी। जो लोग आपसे आगे हैं या सफल हैं, उनसे ईर्ष्या करने की बजाय उन्हें अपना प्रेरणा स्रोत बनायेंगे तो आपको तनाव नहीं रहेगा। यदि आप तनाव से बचना चाहते हैं तो अपने खान–पान पर ध्यान दें। भूखे न रहें। समय पर नाश्ता और भोजन करें। इसमें विलंब होने से तनाव बढ़ता है। अपने भोजन के समय में नियमितता लायें। भोजन पौष्टिक और संतुलित होना चाहिए।

तनावमुक्त जिन्दगी जीने के लिए जरूरी है कि आप किसी खेल, व्यायाम अथवा योग को अपनाएं। इनकी शुरुआत किसी प्रशिक्षित व्यक्ति की देखरेख में करें। इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ता है और चुनौतियों का मुकाबला करने का साहस भी।

अपनी जिम्मेदारियों से भागने से तनाव होता है और उसे पूरा करने से तनाव से मुक्ति मिलती है। इसलिए उसे बखूबी निभाने की कोशिश करें। अपने स्वभाव को हंसमुख बनाएं, क्रोधी नहीं। क्योंकि क्रोध करने से तनाव बढ़ता है और किसी चीज को हंसकर टाल देने से वह दूर हो जाता है। किसी बात को इतनी गंभीरता से न लें कि वह तनाव का कारण बन जाये। उसे सहज रूप से लें।

हर व्यक्ति की मन की मुराद पूरी नहीं होती या उसे वांछित सफलता नहीं मिलती, लेकिन इसमें तनाव पालने की जरूरत नहीं है, आपने प्रयत्न किए यही काफी है। अपनी असफलता से सबक लें तथा आगे बढ़ने के प्रयास जारी रखें।

यदि आप तनावमुक्त जिंदगी चाहते हैं तो सामाजिक बनें। समाज से जुड़े। जब व्यक्ति अकेला होता है तो उसके दिमाग में अनेक फितुर चलते रहते हैं जो उसे तनाव में डाल देते हैं। लेकिन जब वह व्यस्त रहता है तो उसे इन सब बातों को सोचने का समय ही नहीं मिलता है। समाज या अपने कार्य क्षेत्रों के अच्छे लोगों से मिलें। उनसे मित्रता बढ़ाएं। उनके साथ अपनी समस्याएं बांटे। हो सकता है उनका कोई हल निकल जाये और आप तनावमुक्त हो जायें मन ही मन किसी बात को लेकर घुटते रहने से आपका तनाव दूर नहीं होगा।

यदि आप तनाव में हैं तो अच्छी प्रेरक किताबें पढ़ें। अच्छा साहित्य आपको तनाव से बचाता है। यदि अपने पास ये पुस्तकें न हों तो किसी से मांगकर या खरीदकर पढ़ सकते हैं। इनमें महापुरुषों की जीवनियाँ, उनके प्रेरक प्रसंग आदि शामिल करें।

बागवानी करना तनाव दूर करने का एक अच्छा उपाय है। खूबसूरत पेड़–पौधों और फूलों को देखकर आपका मन प्रफुल्लित हो उठता है और आपका तनाव छूमंतर हो जाता है। इसलिए अपने घर में आंगन में पौधे लगाएं, उनकी कटाई छटाई करें, उनमें पानी डालें।

माना कि धन या पैसा कमाना आज के युग में बहुत जरूरी है लेकिन वह ही सब कुछ नहीं है कि उसके पीछे पागलों की भांति भागा जाये। तनाव पालकर पैसा कमाने से सेहत का नाश होता है और सुख, शांति भी खो जाती है। इसलिए पैसा कमाने की अंधी दौड़ में शामिल न हों।

छोटे बच्चे भी आपका तनाव दूर करने में सहायक हो सकते हैं उन्हें गोदी में लेकर खिलाएं, उनके साथ बच्चे बनकर खेलें, उनसे बातें करें। इन सबसे आपको असीम सुख की प्राप्ति होगी। उनकी हंसी या किलकारी आपके तनाव को पलभर में दूर कर देगी। इसलिए बच्चों को झिड़किये नहीं, उन्हें गले से लगाइये।

दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने की प्रवृत्ति को त्याग दें क्योंकि इससे आपका तनाव बढ़ता है। आमतौर पर लोग अपने पड़ोसी, दोस्त या रिश्तेदारों को अधिक सुखी देखकर स्वयं दुःखी हो जाते हैं। आप जिस हाल में हैं, उसी में आपको खुशियाँ तलाशनी चाहिए।

परिवार में उचित सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करें तो आप तनाव में नहीं रहेंगे। परिवार में शांति, प्रेम और सद्भाव का वातावरण बनाने की कोशिश करें। पति–पत्नी, सास–बहू, भाई–भाई, ननद–भौजाई आदि के बीच एक अच्छी समझ विकसित की जानी चाहिए, ताकि टकराव या वैमनस्य की नौबत नहीं आए जो कि अक्सर तनाव का कारण बनती है।

नौकरीपेशा लोगों को अपने कार्य स्थल पर अपने सहकर्मियों अथवा बॉस के साथ उचित तालमेल बैठाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि अपने को सौंप गये दायित्वों का सही ढंग से निर्वाह करें तथा ऐसा कोई काम या आचरण न करें जो तनाव का कारण बनता है।

जो विद्यार्थी हैं उन्हें वर्षभर पढ़ना चाहिए ताकि परीक्षा के समय से तनावमुक्त हो सकें। अन्यथा उन पर एक साथ पढ़ाई का दबाव पड़ेगा जो उन्हें तनाव में डाल देगा।

बहुतों को अपनी संतान के शादी–ब्याह या नौकरी–रोजगार की चिंता रहती है, लेकिन चिंता करने से तनाव ही होता है, उसका समाधान नहीं। समाधान कोशिश करने से होता है। यदि एक–दो प्रयासों के बावजूद भी सफलता नहीं मिलती तो भी प्रयास जारी रखना चाहिए।

जीवन में अनावश्यक विवादों, झगड़ों और लफड़ों से बचें। अपनी सीधी, सरल और सादगीपूर्ण जिंदगी जीयें। यदि आप समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाते हैं तो कई समस्याएं चुटकियों में हल हो जायेंगी। जीवन में विपत्ति या संकट कभी भी आ सकता है, लेकिन ऐसे में धैर्य से काम लेना चाहिए। यह आपकी परीक्षा की घड़ी है। ईश्वर के प्रति आस्था तनाव को कम करती है। जब किसी समस्या का कोई हल न निकले तो उसे ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए।

दयानन्द मठ चम्बा में किए जा रहे
दुर्लभ शारद यज्ञ की पृष्ठभूमि

– आचार्य महावीर सिंह

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक, आर्य जगत के सुविख्यात सन्त शिरोमणि स्वनामधन्य पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने, जैसे तपस्या में लीन वीरबन्दा, वैरागी को गुरू गोबिन्द सिंह जी ने देश व जाति की रक्षा के लिए प्रेरित किया था। योग के मार्ग को छुड़ा राष्ट्र रक्षा यज्ञ के मुख्यधारा में उन्हें जोड़ा था, ठीक उसी प्रकार गायत्री की गहन साधना में लीन, 18–18 घंटे तक समाधि में ही रहने वाले, अपवर्ग के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहे अपने सुयोग्य शिष्य, त्यागी, तपस्वी, परोपकार परायण, दया, उदारता आदि गुणों से विभूषित, अत्यधिक क्षमता से भरपूर, कर्मठता की प्रति मूर्ति, कर्मयोगी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज को भी अन्तर्मुखी मार्ग से यानि कि ध्यानयोग के मार्ग से हटा कर्म योग के मार्ग को अपनाने का आदेश देते हुए उन्हें चम्बा जैसे साधनहीन, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में कर्मयोग का विस्तार करने के लिए भेज दिया। गुरूजनों अपने ज्येष्ठों के द्वारा खाण्डव वन का स्वामित्व सौंप देने के बाद पाण्डवों ने जिस प्रकार कर्मयोग का आश्रय लेते हुए भयंकर दुर्गम उस खाण्डव वन को एक सुन्दर, सुमनोहर अद्वितीय, कमनीय राजधानी का रूप दे दिया था, ठीक उसी प्रकार से चम्बा में पवित्र रावी नदी के किनारे के निर्जन, उजाड़ सर्वथा उपेक्षित भयंकर भू–भाग का स्वामित्व प्राप्त करने के बाद स्वामी जी ने भी अहिल्या के समान सर्वथा उपेक्षित इस स्थान को ही अपने कर्मयोग का आधार बना लिया। गहन चिन्तन, मनन करने के बाद आज्ञा गुरूणां परिपालनीया इस दृढ़व्रत को धारण कर इस स्थान को ही अपनी कर्मभूमि बनाने की ठान ली।

मठ में आगमन का समय– 1975 में पूज्य चरण यहां आए। गुरूजनों के आदेश का पालन तो किया ही जाना चाहिए। एष धर्मः यही पुत्रों का शिष्यों का अन्तेवासियों का धर्म है। बस उसी को शिरोधार्य कर स्वामी जी ने यहां पर इस स्थलि पर शिव का नृत्य करना शुरू कर दिया। कार्यों का विस्तार करना शुरू कर दिया।

संस्कृत महाविद्यालय–सर्वप्रथम स्वामी जी ने संस्कृत महाविद्यालय आरम्भ किया। चूंकि मठ में कमरें नही थे। अतः विद्यालय आरम्भिक दिनों में आर्य समाज मन्दिर चम्बा में आरम्भ किया गया। इस बीच सीढ़ीनुमा दो–तीन खेतों को समतल कर एक छोटा सा हाल व एक कमरा मठ में तैयार कर दिया गया था। सामने एक 25 फुट लम्बा व 12 फुट चौड़ा छोटा सा मैदान भी बनकर तैयार हो गया था। इसके साथ ही आर्य समाज से हटाकर संस्कृत विद्यालय की क्लासें यहीं मठ में लगने लगीं। यह था स्वामी जी के एक वर्ष यानि कि 1975 का कार्य। इसके बाद कार्यों की श्रृंखला लम्बी दर लम्बी होती गई। लोक कल्याण, जन कल्याण के कार्यों का एक प्रबल प्रवाह स्वामी जी ने यहां पर प्रवाहित कर दिया, जोकि दीनों–दुःखियों, दलितो, रोगियों, पीड़ितों के सन्ताप को दूर करते हुए जन–जन के बीच में एक शान्ति की शीतल समीर संचारित करते हुए प्रबल वेग से बहने लगा। विस्तारभय से जिसका विस्तृत उल्लेख मैं यहां नहीं कर रहा हूं।

यज्ञो वैः श्रेष्ठतमः कर्म– इस मान्यता के साथ जिस यज्ञ की अग्नि को गुरू जी के पास से वे लेकर आए थे। उस यज्ञ की अग्नि को शिव की धूनि का रूप देकर स्वामी जी ने यहां पर भी इसे स्थापित कर दिया। संस्था की उन्नति व विकास के कार्य भी चलते रहे। प्रातः सायं शिव की यह धूनी प्रज्वलित होती रही। सभी संस्था के सदस्यों व ब्रह्मचारियों के साथ स्वामी जी बड़ी ही निष्ठा व तन्मयता से यज्ञ भी करते रहे। जैसे–जैसे संस्था की गतिविधियां चलने लगी। संस्था के कार्यों ने भी गति पकड़नी शुरू कर दी। संस्था ने जैसे–जैसे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना शुरू किया, वैसे–वैसे यज्ञों के प्रति स्वामी जी की आस्था, स्वामी जी का विश्वास दृढ़ से दृढ़तर होता गया। उन्होंने वेद की इस उक्ति को यज्ञोर्वैदाधार पृथिवी अपने जीवन में प्रत्यक्ष होते देखा। उसे प्रत्यक्ष होते देखते रहे। जिसके कारण उनके मन में यज्ञों के प्रति श्रद्धा का वह फुब्बारा फूटा कि लम्बे व दीर्घसत्रीय यज्ञों को करने की अभिलाशा उनके मन में अंगड़ाईयां लेने लगीं। उन्होंने उसके अनुरूप अपने मन में एक यज्ञशाला हो, वह भी एक भव्य यज्ञशाला हो जिसमें नैमिशिकारण्य में होने वाले लम्बे व दीर्घसत्रीय यज्ञों का समायोजन हो की तस्वीर बनानी शुरू कर दी। तस्वीर क्या कुछ दिनों के बाद एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण भी उन्होंने कर दिया। यज्ञशाला बनकर तैयार हो गई। अब इसका उदघाटन भी होना चाहिए। यज्ञशाला भव्य बनी है तो उद्घाटन भी भव्य ही होना चाहिए। यह विचार आते ही चूंकि स्वामी जी गायत्री के साधक थे अब भी निशदिन गायत्री की साधना उनकी जारी थी। गायत्री में उनकी अगाध निष्ठा थी, विश्वास था। विश्वास क्यों न हो गायत्री की साधना के बल पर ही तो इस जटिल, दुर्गम, साधनहीन इस पर्वत की तलहटी पर उनके कदम आगे ही आगे बढ़ते जा रहे थे। जो मन में संकल्प ले लेते गायत्री माँ उसे पूरा कर देती। इसीलिए स्वामी जी ने संकल्प लिया कि यज्ञशाला का उद्घाटन गायत्री महायज्ञ से ही करूंगा जिसमें सवा करोड़ गायत्री मंत्रों से आहुतियां दी जाएगीं। शीघ्र ही सन् 1989 में 13 अप्रैल बैशाखी के दिन गुरूदेव का आर्शीवाद लेकर, मां गायत्री की छाया में स्वामी जी ने इस भव्य यज्ञशाला में गायत्री महायज्ञ की धूनि प्रज्वलित कर दी। जिसमें देश, विदेश से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़–घुमड़कर आने लगा। विद्वानों, संगीतज्ञों की टोलियां बीच–बीच में आकर अपनी मधुर वाणी में यज्ञ महिमा का बखान करने तथा मधुर संगीत की स्वर लहरियां घोलने लगीं। विशेषकर पूज्य चरण ही गायत्री जपन के अपने अनुभवों को व गायत्री महायज्ञ की विशेषताओं को लिए अपनी वाणी से ज्ञानगंगा को प्रवाहित करते, तथा मेरी धर्मपत्नी श्री मती सरस्वती देवी अपनी मधुर संगीत की स्वर लहरियों से उस ज्ञानगंगा को तरंगित करती। ज्ञान, कर्म व उपासना की इस त्रिवेणी के संगम से उत्पन्न अलौकिक उद्घोष के साथ स्वाहा–स्वाहा की ध्वनियां दिशाओं को निनादित करने लगी। महाभारत काल में नैमिशिकारण्य के अपने निरन्तर देखे जाने वाले स्वप्न को वर्तमान में प्रत्यक्ष होते देख स्वामी जी गद्–गद् थे। कभी–कभी तो भावुकता में प्रवाहित होने वाले आंसुओं से मां गायत्री के चरणों को पखारने लगते आंखें बन्द कर निःशब्द सर्वथा मौन होकर मां गायत्री के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने में लग जाते। यह सिलसिला 10 सितम्बर 1989 तक लगातार चलता रहा। 10 सितम्बर को अगाध जनसागर के बीच इसकी पूर्णाहुति सम्पन्न हुई।

एक वर्षीय गायत्री महायज्ञ – 5 महीने के गायत्री महायज्ञ की महान सफलता के बाद भी स्वामी जी शान्त होकर नहीं बैठे। इससे आगे भी लम्बे व दीर्घ सत्रीय यज्ञों की धुन और भी प्रबल हो गयी। छोटे व स्वल्पकालीय यज्ञ उनके सन्तोष के कारक नहीं थे।

सुपूराकुनदिका सुपूरा मुशिकांजाली।
सुसंतुष्टा का पुरुषाः स्वल्पेनापितुष्यति।।

थोड़े से जल से भी भर जाने वाली नदी, नालों, चूहे की अंजली के समान थोड़े से सन्तुष्ट होने वाले साधारण लोगों में से स्वामी जी नहीं थे इसीलिए अयंयज्ञो भुवनस्यनाभिः यह यज्ञ ही तो हैं जो संसार का केन्द्र बिन्दु हैं। संसार स्वल्प नहीं है। छोटा नहीं है। बहुत बड़ा है। इतना बड़ा कि यह जो दिखाई देने वाला तथा न दिखाई देने वाला भी संसार है। जिसमें अनेकानेक आकाश गंगाएं हैं। उन आकाश गंगाओं में भी सैंकड़ों–2 सौरमण्डल विद्यामन हैं। हम जिस सौरमण्डल में रह रहे हैं, जिसे देख रहे हैं, जिसमें विचरण कर रहे हैं, जिसमें हमारी यह पृथ्वी भी समाहित है वह एक सौरमण्डल है। ऐसे–ऐसे अनेकानेक सौरमण्डल एक–एक आकाश गंगाओं में विद्यमान हैं और ऐसे –ऐसे अनेक आकाश गंगाओं वाला यह जगत भी वेद भगवान कहते हैं– पादोऽस्य विश्वाभूतानि पूर्व चित्रित यह सारा ब्रह्माण्ड उस परमात्मा का एक चरण है। एक भाग मात्र है। तीन भाग तो इसके अमृतमय लोकों के रूप में दिवलोक में विद्यमान है। त्रिपादस्यामृतम्दिवि इतना विशाल परमात्मा का यह संसार इस सब की नाभि– इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की धूरी इसकी नाभि इसका केन्द्र यज्ञ है। भुवन विशाल है। तो नाभि रूप यज्ञ भी विशाल ही होने चाहिए। यह मान्यता स्वामी जी की थी। यज्ञ में दी जाने वाली आहुतियां दृष्यमान, प्राणी, अप्राणी रूप जगत का कल्याण करने वाली तो होती ही हैं। दिव्यलोकों में निवास करने वाले जिनके विषय में वेद भगवान ने त्रिपादस्यामृतमदिवि उच्चरित किया है। उन लोकों में रहने वाले दिव्यजनों, दिव्यपुरुषों, मुक्तात्माओं को भी यज्ञ में ड़ाली गई यह आहुतियां पुष्ट व आह्लादित करने वाली होती हैं। यह सब उन स्वल्पकालीय यज्ञों से संभव नहीं जिनमें आज्य व हव्य की मात्राएं भी नाम मात्र की होती हैं। अभ्यास व संस्कारों को बनाए रखने के लिए यह भी ठीक है। यह सब भी होते रहने चाहिए। परन्तु संसार के अनुरूप उसकी नाभि भी तो विशाल होगी। विशाल होनी चाहिए और वेद भगवान कहते हैं– अयं यज्ञो भुवनस्यनाभिः यह यज्ञ ही सम्पूर्ण भुवन की नाभि है। इसलिए यह यज्ञ भी विशाल होने चाहिएं। लम्बे व दीर्घसत्रीय होने चाहिए। ऐसे यज्ञ होने चाहिए जिनमें प्रचुर मात्रा में अनेकानेक हव्य की आहुतियां अर्पित व समर्पित की जा रही हों। ऐसे यज्ञ एक नहीं अनेकों होने चाहिएं। एक स्थान पर नहीं अनेकों स्थानों पर होने चाहिए। प्राचीन काल में इसी प्रकार की यज्ञों की संस्कृति चलती रही, प्रचलित रही। घर–घर में, ग्राम–ग्राम में, वनों में, उपवनों में, राजमहलों में, झोंपड़ियों में चौबारों में, देश के हर कोने में बड़े–बड़े यज्ञों के अनुष्ठान होते रहते थे। यही कारण था कि उस काल में सर्वविध सुख व शांति का साम्राज्य था। आज वह यज्ञों की परम्परा लुप्त हो गयी है। इसलिए आज समाज में विभत्स व भयावह वातावरण बना हुआ है। जिससे प्राणीमात्र त्रस्त है। देवजन प्रकुपित हैं। इसलिए पुनः इस ओर प्रयास किया जाना चाहिए, और स्वामी जी ने इसके लिए प्रयास किया और भरपूर रूप से प्रयास किया। यद्यपि स्वामी जी का स्वास्थ्य अब ढलान पर था। अत्यधिक तप, साधना व कठोर श्रम के कारण स्वास्थ में गिरावट शुरू हो गयी थी। परन्तु उनके हृदय सागर में उठने वाली उन ज्वार भाटाओं में कमी नहीं आई। स्वास्थ्य में शिथिलता के बावजूद भी बहुत कुछ कर गुजरने की ज्वार भाटाएं और भी प्रबल वेग से उठने लगी। उनमें किसी भी प्रकार की कमी नहीं आई। इसी का परिणाम था कि स्वामी जी ने तीन वर्षों तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का अनुष्ठान करने का मन बना लिया। उनका मानना था कोई क्या कर रहा है। इसकी

शेष पृष्ठ 6 पर

आमन्त्रण

26 सितम्बर 2019 से 28 सितम्बर 2019 तक आयोजित मठ के 39वें वार्षिकोत्सव के यज्ञ में तथा 29 सितम्बर 2019 की प्रातः 6.30 से 30 सितम्बर 2019 के प्रातः 10 बजे तक अहः अक्तुं दिन रात निरन्तर चलने वाले इस दुर्लभ शारद यज्ञ में आप सभी आमन्त्रित हैं। इस यज्ञ व सत्संग की गंगा में नहाने के लिए आप सब हृदय की गहराईयों से सादर आमन्त्रित हैं। अवश्य कर आएं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान व दयानन्द मठ चम्बा के संरक्षक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के दिशा–निर्देश में तथा महान त्यागी तपस्वी सन्त पूज्य स्वामी जी के ही सन्यस्त शिष्य पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में यह सम्पूर्ण कार्यक्रम चलेगा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र–छात्राओं की गतिविधियां आपको आकर्षित व प्रभावित करेंगी ही करेंगी। कार्यक्रम के बीच में अपनी विभिन्न प्रस्तुतियों के द्वारा अपनी कला व प्रतिभाओं का भी आप लोगों के सामने प्रदर्शन करेंगी। इसलिए इस यज्ञोत्सव के कार्यकम में आप लोग अवश्य भाग लें। स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के सभी सदस्य, आदर्श विद्यालय के सभी अध्यापक व कर्मचारी वर्ग तथा मठ प्रबन्धक समिति के सभी सदस्य आप लोगों की प्रतिक्षा में रहेंगें।

आप ही लोगों के आग्रह पर, आप लोगों की सुविधा के लिए दयानन्द मठ चम्बा के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का खाता न. व आईएफएससी नम्बर भी दे रहे हैं।

खाता धारक का नामः– दयानन्द मठ चम्बा

खाता सं – 11149833806

IFSC Code- SBIN0000626

आप लोगों के दर्शनों का प्यासा, आप लोगों से मिलने के लिए व्याकुल, आप लोगों की राह में आंखें बिछाए, अपलक नेत्रों से आप लोगों की बाट जोहता आपका अपना ही।

– आचार्य महावीर सिंह

देश को प्लास्टिक मुक्त बनाना ज्यादा जरूरी

हर साल 60 लाख टन पैदा होता है प्लास्टिक का कचरा और इस उद्योग को दोगुना करने के इरादे

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

देश के प्लास्टिक उद्योग की ओर से हाल ही में बयान आया कि वह देश में प्लास्टिक उद्योग को दोगुना करना चाहते हैं ताकि इस क्षेत्र में रोजगार बढ़ाया जा सके। जिस उद्योग को उत्तरोत्तर घटाने की जरूरत है, वहाँ ऐसा इरादा चिन्ता पैदा करता है। प्लास्टिक मनुष्य जाति के लिए कितना खतरनाक हो सकता है, इसकी कल्पना अब से 50–60 साल पहले किसी को नहीं थी। उस जमाने में प्लास्टिक के खिलौने बनते थे, बड़े–बड़े ढोल और टंकियाँ बनने लगी थी और तार, टेलीफोन व हैंडल जैसे उपकरण के साथ आज प्लास्टिक का साम्राज्य हर क्षेत्र में फैल गया है। अनुमान है कि 1950 से अब तक दुनिया में 8 अरब 30 करोड़ टन से भी अधिक प्लास्टिक का उत्पादन हो चुका है। हर साल दुनिया में 500 अरब प्लास्टिक की थैलियाँ इस्तेमाल की जाती हैं, जबकि रोजमर्रा की प्लास्टिक की चीजों के नष्ट होने में 800 से 1000 साल तक का समय लगता है।

प्लास्टिक के गिलासों, कटोरियों, चम्मचों, बोतलों, डिब्बों, प्लेटों आदि के माध्यम से सिर्फ एक साल में किसी भी मनुष्य के शरीर में प्लास्टिक के 52000 कण प्रवेश कर सकते हैं। माइक्रो प्लास्टिक के ये सूक्ष्म कण सिर्फ खाने–पीने के जरिए ही शरीर में घर नहीं करते हैं, बल्कि ये प्लास्टिक के कपड़ों, ट्यूब–टायरों, कॉन्टेक्ट लेंस, मोबाइल फोन, पेन–पेंसिलों आदि के जरिए भी मानव शरीर में अपनी जगह बना लेते हैं। लोगों को यह पता ही नहीं चलता है कि उन्हें कैंसर क्यों हो जाता है और उनके फेफड़े क्यों खराब हो जाते हैं। बच्चों के खिलौने में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक में जब कई तरह के रंग–रोगन मिला दिए जाते हैं, तो वे उन मासूम बच्चों को भी गंभीर बीमारियों का शिकार बना देते हैं। यूरोप और जापान में इस तरह के खिलौनों पर पूर्ण प्रतिबन्ध है।

इससे भी ज्यादा खतरा प्लास्टिक के कचरे से पैदा होता है, जो इतना ज्यादा फैल गया है कि पूरे पृथ्वी–मंडल के चारों तरफ कम से कम चार बार लपेटा जा सकता है। सारी दुनिया में प्लास्टिक की जितनी भी चीजें बनती हैं, उनमें से ज्यादा ऐसी हैं, जो सिर्फ एक बार ही इस्तेमाल होती हैं। आपके पास कांच, पीतल या स्टील का गिलास हो तो उसे आप कई वर्षों तक इस्तेमाल करते हैं, लेकिन प्लास्टिक के गिलास में पानी पीकर उसे फेंक देते हैं। भारत में इस तरह का प्लास्टिक का कचरा रोज 2 हजार टन से भी ज्यादा इकट्टा हो जाता है।

प्लास्टिक के इस कचरे में हमारे समुद्र, नदियाँ, तालाब और कुएं पटे जा रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे समुद्र में प्लास्टिक के 5000 अरब टुकड़े तैर रहे हैं। ये टुकड़े समुद्री जीवों के पेट में जाकर उनकी मौत का कारण बनते हैं। जंगलों में फैला प्लास्टिक कचरा पशुओं और पक्षियों की जान तो ले ही लेता है, वह पेड़–पौधों और वनस्पतियों को भी हानि पहुंचाता है। प्लास्टिक जलाने से जो जहरीली हवा बनती है, उससे भी पानी विषाक्त हो जाता है, हमें सांस लेने में कठिनाई होती है।

जो प्लास्टिक अब से 60–70 साल पहले मनुष्य जाति के लिए वरदान की तरह पृथ्वी पर उतरा था, वह अब अभिशाप बन गया है। प्लास्टिक के इस्तेमाल के कारण सैकड़ों वर्षों से चली आ रही रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजें नदारद हो गई हैं। अब मिट्टी के कुल्हड़ों में पानी कौन पीता है, पत्तलों पर खाना कौन खाता है, जूट की चटाइयाँ कौन बिछाता है, लकड़ी की कलमों से कौन लिखता है, अचार और मुरब्बों के लिए चीनी, कांच और मिट्टी के मर्तबान कौन रखता है, बाजार जाते वक्त किसके हाथ में कपड़े की थैली होती है?अब हमारे लाखों दर्जियों, कुम्हारों, सुतारों के पेट पर लात मारकर हमने प्लास्टिक उद्योग का महाराक्षस खड़ा कर दिया है, जो आज सवा दो लाख करोड़ रुपए तक पहुँच गया है। उसमें 45 लाख लोग लगे हुए हैं। प्लास्टिक उद्योग पर अगर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया तो इतने लोगों के रोजगार का क्या होगा? 45 लाख लोग एकाएक बेरोजगार हो जाएं, ऐसा काम कोई सरकार क्यों करना चाहेगी? लेकिन ऐसे फैसले तो तुरंत करने ही चाहिए, जिससे प्लास्टिक उद्योग से पैदा होने वाली भयंकर बीमारियाँ, जहरीले प्रदूषण और पर्यावरण के विनाश को रोका जा सके। सरकार चाहे तो प्लास्टिक से बनी उस हर चीज पर प्रतिबंध लगा सकती है, जो लोगों के खाने–पीने, पहनने–ओढने, सांस लेने आदि में इस्तेमाल होती है। कई क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें प्लास्टिक का यथोचित इस्तेमाल हो सकता है। यदि प्रतिबंध के कारण कुछ रोजगार छिनेंगे तो हमारे लाखों कुम्हारों, कसेरों, दर्जियों, सुतारों, लुहारों को नया रोजगार मिलेगा। मुनाफाखोरी भी घटेगी।

दुनिया के लगभग 40 देशों ने प्लास्टिक के खतरे को भांप लिया है। उन्होंने प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। केन्या में तो प्लास्टिक की थैलियाँ यदि कोई बेचे या इस्तेमाल करे तो उसे चार साल की कैद और 40 हजार डॉलर जुर्माना भरना पड़ सकता है। फ्रांस, चीन, इटली और रवांडा जैसे देशों में प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध है। भारत इस मामले में काफी ढीला है। हमारे कुछ राज्यों ने प्रतिबंध लगाने की घोषणा तो कर दी है, लेकिन उसे वे सख्ती से लागू नहीं कर रहे हैं। भारत में आज हर व्यक्ति साल भर में लगभग 200 प्लास्टिक की थैलियों का इस्तेमाल करके उन्हें कूड़े में फेंक देता है। देश में हर साल लगभग 60 लाख टन प्लास्टिक कूड़ा पैदा होता है। बड़े शहरों में इस कूड़े की भरमार है। हमारे केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार दिल्ली में 690 टन, चेन्नई में 429 टन, कोलकाता में 426 टन और मुंबई में 408 टन प्लास्टिक कचरा रोज पैदा होता है।

यदि प्लास्टिक के इस खतरे से देश को बचाना है तो सिर्फ प्रतिबंध की घोषणाओं से कुछ नहीं होगा। इनके साथ–साथ प्लास्टिक की थैलियाँ, प्लेटें, ग्लास, चम्मच, कटोरियाँ और बर्तन बनाने वालों पर लाखों रुपए का जुर्माना हो और हल्की–फुल्की सजा भी हो, यह भी जरूरी है। इस प्रतिबंध के कारण जो कारखाने बंद हों और जो मजदूर बेरोजगार हों, उनकी समुचित देखभाल की व्यवस्था भी सरकार करे। इन सबसे भी ज्यादा जरूरी है कि हमारे देश के राजनीतिक दल अपने करोड़ों कार्यकर्ताओं से प्लास्टिक के बर्तनों के बहिष्कार का संकल्प करवाएं। इस बहिष्कार के पक्ष में जबर्दस्त जन–आंदोलन चलाएं। देश के साधु–संत, मौलवी–पादरी, समाजसेवी–सुधारक लोग भी प्लास्टिक के खतरों से लोगों को जागरूक करने का अभियान चलाएं। इस देश को किसी विचारधारा, किसी व्यक्ति, किसी नेता या पार्टी से मुक्त कराने की बजाय प्लास्टिक से मुक्त कराना ज्यादा जरूरी है।

अन्धविश्वास की गहरी होती जड़ें

– जयंत नार्लीकर

प्रसिद्ध भौतिकविद् डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ब्रह्माण्ड विज्ञान (कास्मोलाजी) के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं। सर फ्रेड हॉयल के साथ मिलकर गुरुत्वाकर्षण के क्षेत्र में किये गये उनके महत्त्वपूर्ण कार्य को सारी दुनिया में हॉयल नार्लीकर थ्योरी के रूप में जाना जाता है। १९७२ तक डॉ. नार्लीकर किंग्स कॉलेज, कैंब्रिज में फैलो थे। १९७२ में मुम्बई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में प्रोफेसर के रूप में उन्होंने कार्य शुरू किया। वह इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन के ब्रह्माण्ड विज्ञान आयोग के अध्यक्ष भी थे। २००४ में भारत सरकार ने उन्हें पदम् विभूषण से और २०१० में महाराष्ट्र सरकार ने महाराष्ट्र भूषण सम्मान से सम्मानित किया.... डॉ. नार्लीकर ने निरंतर अपने लेखन के जरिये यह प्रयास किया है कि लोगों के अंदर एक वैज्ञानिक नजरिया विकसित हो। यहाँ हम उनका एक लेख प्रस्तुत कर रहे हैं जो अनेक अंधविश्वासों से मुक्त होने में सहायक हो सकता है।

– सम्पादक

जब कोई एक खगोल विज्ञानी की तरह मेरा स्वागत करते हुए यह जानना चाहता है कि ग्रहों का हमारे भाग्य पर क्या असर पड़ता है तो मैं हैरान हो उठता हूँ। यह सवाल करने वाला आम तौर पर कोई निरक्षर ग्रामीण नहीं होता। वह हाथ में मोबाइल फोन लिए कोई शिक्षित भारतीय नागरिक होता है। क्या उसे इस बात की जानकारी नहीं है कि वैज्ञानिक लोग ज्योतिष को गंभीरता से नहीं लेते?

यह विचार कि मनुष्य के भाग्य का संचालन ग्रहों से होता है काफी पुराना बल्कि यूं कहें कि यह बेबीलोन और ग्रीक संस्कृतियों के जमाने से है। वैसे देखा जाये तो वेदों में ग्रहों से चालित ज्योतिष का कोई उल्लेख नहीं है। ग्रहों और सौर मंडल का अध्ययन करने वालों ने इस तथ्य पर ध्यान दिया है कि अत्यंत नियमित ढंग से तारों के आकाशीय ढांचे में कुछ पिण्ड ऐसे हैं जिनकी गति एक जैसी है और जो कभी पीछे तो कभी आगे जाते हैं। ग्रीक लोग इन ग्रह पिण्डों को अपनी भाषा में घुमक्कड़ कहते हैं। ये ग्रह घूमते क्यों हैं? वैज्ञानिक रूझान वाले प्रेक्षकों ने अरस्तू का पालन किया और ग्रहों की गति को रेखागणित की दृष्टि से परिभाषित ऐसे ढाँचे में रखा जिससे इस घूमने की प्रक्रिया के तरीके को ढूंढा जा सके।

जो लोग इस समूह में नहीं थे उन्हें यह मान लिया कि ये ग्रह अपनी इच्छाशक्ति के कारण चक्कर लगाते रहते हैं। इस अवधारणा के आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ग्रहों की इच्छाशक्ति का प्रभाव पृथ्वी पर रहने वाले नश्वर प्राणियों पर भी पड़ता है। यही विश्वास बड़ा रूप लेते-लेते ज्योतिष बन गया।

इस विश्वास ने दूर-दूर तक यात्रा की और भारत में इसके प्रति अत्यन्त सकारात्मक भाव देखने को मिला। वैज्ञानिक नजरिए को अनेक झटके लगे। लेकिन आगे चलकर कोपरनिकस, गैलीलियो और केप्लर ने ग्रहों की गति के पीछे जो वास्तविक पैटर्न है इसका पता कर लिया।

17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में केप्लर की खोजों ने न्यूटन को गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज के लिए प्रेरित किया। आज हमें पता है कि ग्रहों की गति क्यों है। उनकी कोई इच्छाशक्ति नहीं होती। इसके विपरीत उनकी एक आंतरिक व्यवस्था होती है जिसके अनुसार वे गणितीय ढंग से निर्धारित फेरों के अनुसार सूर्य के चारों तरफ घूमते हैं। आज अंतरिक्ष वैज्ञानिक इस स्थिति में हैं कि वे एकदम सही-सही इस बात की गणना कर सकें कि उनका भेजा हुआ अंतरिक्ष यान किस ग्रह से और किस स्थान पर जाकर मिलेगा। इसलिए अब न केवल ग्रहों के साथ जुड़ा रहस्य गायब हो चुका है बल्कि अब इनका अध्ययन एक भौतिक पिण्ड के रूप में किया जाता है जो हमारे सौर मण्डल का एक हिस्सा है। इस पृष्ठभूमि में अगर देखें तो यह अजीब सी बात लगती है जब लोग यह सवाल करते हैं कि ग्रहों का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

भारतीयों के मानस में ज्योतिष उसी तरह जड़ जमाकर बैठा है जैसे जातिप्रथा। मैंने 40 से अधिक देशों की यात्राएँ की हैं और नक्षत्र विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर भाषण दिए हैं। मैंने देखा है कि भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ हर भाषण के

बाद कोई न कोई यह सवाल जरूर करता है कि ग्रहों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। यद्यपि अनेक देशों में अखबारों में राशिफल जैसी चीजें प्रकाशित होती रहती हैं लेकिन भारत में ही इसे गंभीरता से लिया जाता है। लोग यह जानने के लिए परेशान रहते हैं कि पुराना घर छोड़कर नए घर में किस समय जाया जाए? यात्रा करने के लिए कौन सा शुभ मुहूर्त है? क्या कार या स्कूटर खरीदने के लिए यह ठीक समय है? क्या शादी-व्याह के लिए लड़के-लड़की की कुंडली मिला ली जाये अथवा कब कोई मुख्यमंत्री अपने मंत्रिमण्डल को शपथ ग्रहण कराए इसके लिए भी ग्रहों की मदद ली जाती है।

सवाल करने वाले की ओर से यह दलील दी जा सकती है कि कहीं कोई अज्ञात भौतिक सम्बन्ध होगा जिसके जरिए अलग-अलग समय में पैदा हुए लोगों पर अलग-अलग ग्रहों का प्रभाव पड़ता होगा। जो भी हो आधुनिक विज्ञान यह दावा तो नहीं करता कि उसने सारी चीजों की खोज कर ली है।

अगर इस संभावना को थोड़ी देर के लिए मान भी लें तो कोई भी व्यक्ति ग्रहों के प्रभावों के दावों का अनुभव सिद्ध अध्ययन कर सकता है। वैज्ञानिकों ने इस तरह के नियंत्रित प्रयोग किए हैं और इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि मनुष्य के जीवन पर ग्रहों से पड़ने वाले प्रभाव की परिकल्पना का कोई आधार नहीं है। एक ही तारीख में विभिन्न अखबारों द्वारा दी गयी राशिफल पर एक नजर दौड़ाइए। वे कभी एक जैसे नहीं होते। विज्ञान आगे इसलिए बढ़ सका क्योंकि इसने परिकल्पनाओं या सिद्धान्तों के प्रति एक तर्कसंगत दृष्टिकोण अपनाया। किसी भी सिद्धान्त को गंभीरता से लेने के लिए सभी तथ्यों के साथ इसकी भविष्यवाणियों में भी निरंतरता होनी चाहिए। हो सकता है कि कोई सिद्धान्त आज इस मानक पर खरा उतर जाये लेकिन भविष्य में कुछ नए तथ्यों की व्याख्या करने में विफल हो जाये। वैसी हालत में उस सिद्धान्त में संशोधन किया जाना चाहिए या उसके स्थान पर नया सिद्धान्त लाना चाहिए। यह व्यवस्था जिसने विज्ञान की प्रगति में इतनी अच्छी तरह काम किया है इसका पालन हमें अपने दैनिक जीवन में भी करना चाहिए चाहे हम वैज्ञानिक हों या न हों।

अगर हमसे कहा जाता है कि अमुक विचार को इसलिए मानना चाहिए क्योंकि हमारी परंपरा ऐसा कहती है तो हमें इसका विरोध करते हुए उस विचार के समर्थन में तथ्यात्मक साक्ष्यों की खोज करनी चाहिए। यही वैज्ञानिक सोच है। अगर वैज्ञानिक सोच के साथ ज्योतिष की छानबीन करें तो उसका अस्तित्व कहीं नहीं टिकता।

अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' में जवाहर लाल नेहरू ने वैज्ञानिक मिजाज के पक्ष में दलीलें दी थीं। उन्होंने इस तथ्य पर खेद व्यक्त किया कि हम अपनी परंपराओं से अभिभूत हो जाते हैं और बुद्धिमान लोगों की भी आलोचना की ग्रंथि काम करना बंद कर देती है। उन्होंने यह उम्मीद जताई थी कि राजनीतिक आजादी से इन स्थितियों में परिवर्तन आयेगा।

आजादी के 60 साल बाद भी अज्ञानता और अंधविश्वास तेजी के साथ फल-फूल रहा है। याद करिये कि जब यह खबर आई कि गणेश की मूर्ति दूध पी रही है तो इस पर लोगों ने कितने मूर्खतापूर्ण ढंग से काम किया। यह भारत में ही संभव है कि अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों से पूर्व अनेक टीवी चैनल मजे हुए खिलाड़ियों के साथ कुछ ज्योतिषियों को भी यह बताने के लिए बैठा देते हैं कि कौन सी टीम जीतेगी या हारेगी।

ज्योतिष में विश्वास, साधुओं और बाबाओं के चमत्कारों तथा वास्तुशास्त्र के प्रति निष्ठा में कमी आने की बजाय, जैसा कि नेहरू ने अपेक्षा की थी, लगातार वृद्धि होती गई है। वैज्ञानिक मिजाज की नेहरू की कल्पना धराशायी हो चुकी है। क्या हम 21वीं शताब्दी में रह रहे हैं या 18वीं शताब्दी में?

पृष्ठ 3 का शेष

दयानन्द मठ चम्बा में किए जा रहे दुर्लभ शारद यज्ञ की पृष्ठभूमि

विवेचना करने के बजाय हम क्या कर सकते हैं इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए और वह किया जाना चाहिए। अपनी इसी मान्यता और भावना के अनुरूप पूज्य स्वामी जी अपने जीवन में व्यवहार भी करते रहे। जीवन के अन्तीम श्वासों तक, अन्तीम क्षणों तक अधिकाधिक रूप से वह सर्व कार्य करते रहे जो यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। जिनसे संसार में, प्राणी अप्राणी रूप संसार का महान कल्याण होता है और अतीत में होता भी रहा। जीवन की परवाह किए बिना, स्वास्थ्य की चिन्ता किए बिना भी वह सब करते रहे। परमात्मा के द्वारा साधन के रूप में दिए इस शरीर ने एक न एक दिन नष्ट होना है। एक न एक दिन इसका साथ छूटना है, तो फिर इससे जितना काम किया जाए, करना चाहिए। यह शरीर हमें सजाने के लिए नहीं मिला है, अपितु उपयोग के लिए मिला है। इसलिए इसका जितना उपयोग किया जाए करना चाहिए। न जाने कब हाथ में कुल्हाड़ी लिए काल आ जाए और जीवन की डोर को काट कर चला जाए। जीवन में जो अच्छा करना है उसे आज ही कर डालो। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। यह सोच थी उनकी इसी के अनुरूप वे अपने जीवन में कार्य करते रहे। यहां पर भी उन्होंने वही किया।

गायत्री महायज्ञ की भीष्मप्रतिज्ञा के साथ प्रारम्भन– एक वर्षीय महायज्ञ से 11 वर्षों तक के बाद भी वह दिन आ गया जब स्वामी जी ने त्रिवर्षीय यज्ञ को आरम्भ करने का मन बना लिया। 11 वर्षों के इस अन्तराल में स्वामी जी मठ के विकास कार्यों में लगे रहे। चिकित्सा के जैसे नेत्र चिकित्सा, नेचरोपैथी, एक्यूप्रेशर रूपी यज्ञों के द्वारा जन–जन के सन्ताप को हरने तथा समाज के सर्वविध कल्याण के कार्यों में लगे रहे। मठ के वार्षिक उत्सवों के माध्यम से बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन भी करते रहे। इस व्यस्तता भरे जीवन से जैसे ही कुछ फुर्सत मिली पुनः लम्बे व दीर्घसत्रीय यज्ञों की इच्छा ने उनके अन्दर अंगड़ाई लेना शुरू कर दिया। उनकी वह इच्छा प्रबल हो उठी, और एक दिन दैनिक हवन के बाद यज्ञशाला के बाहर खड़े मेरे कंधे पर हाथ रख स्वामी जी ने कहा– महावीर मैं चाहता हूं कि अब मैं तीन वर्ष तक लगातार चलने वाला यज्ञ शुरू कर दूं। मैंने कहा– स्वामी जी इसमें बहुत व्यय होगा। हमारे पास कुछ भी तो नही है। स्वामी जी ने कहा सौलह सौ रूपए तो हैं। बस इसी से इस महायज्ञ को प्रारम्भ करेंगें और तो और मैं न तो कहीं मांगने जाउंगा न ही किसी को मांगने के लिए भेजूंगा। यहां तक कि मैं पूरे यज्ञ के दौरान मठ के गेट से भी बाहर पैर नहीं रखूंगा। देखना चमत्कार होगा, यज्ञ भव्य रूप से चलेगा और भव्य रूप से ही सम्पन्न भी होगा। मेरी मां गायत्री में पूरी आस्था है। मैंने तो कार्य आरम्भ करना है, पूरा उसी ने करना है। 16 अप्रैल 2000 का वह दिन भी आया जब स्वामी जी महाराज, न मैं मागूंगा, न ही गेट के बाहर कदम रखूंगा इस भीष्म प्रतिज्ञा के साथ यज्ञ की धूनि रमा कर बैठ गए। यज्ञ में प्रारम्भ से ही चमत्कार होने शुरू हो गए। ओ३म भूभुर्वः स्वः से दीप प्रज्वलित कर भूभुर्वः स्वर्द्योरिव भूम्ना– की कामना से यज्ञ कुण्ड में अग्नि की स्थापना के साथ जैसे–जैसे घृत की धाराओं से अभिसिंचित, यज्ञ की वह अग्नि अपनी लपलपाती लपटों से द्युलोक को छूने का उपक्रम करने लगी। सुन्दर, सुवासित रोगनाशक, पुष्टिकारक, मधुर पदार्थों से निर्मित सामग्री की आहुतियां भी उसमें समर्पित किए जाने लगे।

इस बार गायत्री मंत्र के साथ–साथ पवित्र ऋग्वेद के मंत्रों से भी आहुतियां दी जाने लगी। जैसे–जैसे यज्ञ का सफर आगे बढ़ रहा था चमत्कार पर चमत्कार होते जा रहे थे। मां गायत्री यज्ञ के संसाधनों को उपस्थित किए जा रही थी। उन चमत्कारों का वर्णन फिर कभी करूंगा। बस शास्त्रों में वर्णित वामनावतार को प्रत्यक्ष होते देख रहे थे। उसके छोटे आकार को आश्चर्य के साथ हम लोग विशाल होते देख रहे थे। वास्तव में यही तो वामनावतार है। वेदी के एक भाग में अग्नि का वह छोटा सा रूप स्थापित किया जाता है। जिसको हवा का झोंका एक क्षण में बुझा सकती है। परन्तु धीरे–धीरे यज्ञ बेदी में स्थापित वही अग्नि विशाल रूप धारण कर तीनों लोकों को अपने अधीन कर लेती है। कैसे कर लेती है। इसका चित्रण फिर करूंगा। मेरे सामने ऋषि कण्व की, बेटी शंकुतला के विवाह के लिए प्राप्त प्रसाधन, सामग्रियों को देखकर शिष्यों से किया गया संवाद स्मरण हो आया। जिसका चित्रण कवि कालिदास ने बहुत ही सुन्दर तरीके से उपस्थित किया है। ऋषि अपने शिष्यों से प्रश्न करता है– हे मेरे वत्सो। हम ठहरे वनवासी हमारे पास प्रसाधन सामग्रियों व विवाह के लिए, पुत्रियों को सजाने के लिए सुन्दर वस्त्राभूषणों का सर्वथा अभाव होता है। फिर यह सब तुम कहां से लाए। किसने तुम्हें यह सब दिया है। शिष्य कहते हैं–

क्षौमम् केनचिदिन्दुपाण्डुतरूणा मांगल्यमाविसकृतम
निष्ठ्यत चरणोपराग सुमगो लाक्षारसो केनचिद
नेम्योम्योवनदेवता करतलैरापर्वमागोत्थितैर्द
तान्याभरणानि नः किसलय च्छायापरिस्पर्धिभिः।

गुरूदेव – आपकी अनुकम्पा से वन देवताओं ने परिस्पर्धा करते हुए किसी ने सुन्दर रेशमी वस्त्रों को समर्पित किया, तो किसी ने हाथों को उठा–उठा कर सुन्दर आभूषणों को दिया। किसी ने हाथ–पैरों को रंगने के महावर (मेहन्दी) निकाल कर दी । ऐसे ही विवाह के योग्य सामग्रियों को हमने प्राप्त किया। जिन्हें लेकर हम आप के पास उपस्थित हो गए हैं। यहां पर भी देख रहे थे। स्वामी जी तो यज्ञ बेदी तक सीमित होकर बैठ गए थे, पर संसाधनों में कोई कमी नहीं आई। घृत की जगह घृत आ रहा था। सामग्री की जगह सामग्री आ रही थी। अन्न की जगह अन्न की आपूर्ति हो रही थी। दुर्गम साधनों की कमी वाले इस पर्वतीय प्रदेश में इन सब संसाधनों का प्रवाह कहां से प्रस्फुटित हो रहा था। कहां से एकत्रित हो रहे थे। यह सारे संसाधन उसी गायत्री मां की प्रेरणा से हो रहे थे। यज्ञ द्वारा पूजित देवों व पितरों की कृपा से हो रहे थे। जिसे आश्चर्य मे भर कर हम देख तो रहे थे, परन्तु यज्ञ कार्यों में हर दम व्यस्त रहने के कारण उसके विषय में सोच व विचार नहीं कर पा रहे थे। यद्यपि यह यज्ञ डेढ़ वर्ष ही चला स्वास्थ्य में गड़बड़ी के कारण स्वामी जी को उनके मना करने के बाद भी हम डाक्टर के पास ले गए। गेट से बाहर न निकलने की उनकी प्रतिज्ञा टूट गई थी। उसके बाद गुरू जी के ही आदेश से उन्होंनें 21 अक्तूबर 2001 को इसकी पूर्णाहुति कर दी थी। 1,600 रुपये की राशि से आरम्भ इस यज्ञ में 250 टीन घृत के लगे। 94 क्विंटल सामग्री और 1,100 क्विंटल समिधाएं लगीं। राशन, आवास व अन्य कार्य इसके अलावा हैं। आज जब इस सब के बारे में सोचते हैं, विचारते हैं तो आश्चर्य होता है। स्वामी जी के महान तप व साधना से अभिभूत होकर श्रद्धा से उनके चरणों में सिर झुक जाता हैं। ऐसे महापुरुष, कर्मयोगी, शिवरूप की छत्रछाया में हम रहे। जीवन के इतने लम्बे सफर तक हमें उनका साथ प्राप्त हुआ। पग–पग पर उनका मार्गदर्शन मिला, उनके आर्शीवादों से मैं नहाता रहा और आज भी नहा रहा हूं, सोचकर अपने भाग्य पर इठलाता रहता हूं। अपने आप को गौरवशाली मानता हुआ अपने जीवन को धन्य मानता हूं। आज उन्हीं की कृपाओं के भार तले दबा हुआ मैं जो भी प्रयास कर रहा हूं उनके संकल्पों को, उनके दिए कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा हूं, बस पूज्य चरणों की कृपा के उसी भार को कम करने का प्रयास कर रहा हूं, जोकि इस जन्म में तो क्या जन्म जन्मान्तरों तक भी हल्का नहीं हो सकता है। फिर भी प्रयास तो करना ही है, कर भी रहा हूं। इसमें भी उन्हीं के द्वारा दिए जा रहे शक्ति व सामर्थ्य से आगे बढ़ रहा हूं। यदि आत्मीयजनों का सहयोग मिल रहा है, तो वह भी उन्हीं की कृपा का परिणाम है। भावना में बहने लगता हूं तो बहुत दूर तक चला जाता हूं। यहां से वापिस लौटता हूं।

दुर्लभ शारद यज्ञ का शुभारंभ– धुन के धनी पूज्य स्वामी महाराज का त्रिवर्षीय यज्ञ चल रहा था। गायत्री मंत्रों से आहुतियां दी जा रही थी। बीच–बीच में ऋग्वेद के मंत्रों से भी आहुतियां दी जाने लगी। ऋग्वेद के मंत्रों से दी जाने वाली आहुतियों का यह सफर एक मण्डल से दूसरे मण्डल तक, दूसरे से तीसरे तक इस तरह सातवें मण्डल तक पहुंच चुका था। सातवें मण्डल में प्रवेश करते ही एक–एक कर सातवें मण्डल के सूक्तों से आहुतियों की बारी आयी। एक–एक कर प्रदत्त आहुतियों वाले सूक्तों को पीछे छोड़ यज्ञ का यह सफर आगे बढ़ता रहा। वेदमंत्रों के सुमधुर स्वरों से दिशाओं को निनादित करता हुआ यह सुहावना सफर आगे बढ़ ही रहा था कि छयासठवें सूक्त के ग्याहरवें मंत्र पर जाकर स्वामी जी की नजर रूक गइ। अगाध समुद्र की तलहटी पर किसी एक कोने में पड़े मूल्यवान मोती के समान वेद की ऋचाओं से यज्ञ करने वालों के, तथा स्वाध्यायशील मनीषियों की नजरों से अछूता सर्वथा उपेक्षित सा यह मंत्र मानो किसी ऐसे ही तपस्वी, धुन के धनी, कर्मठ, महान साधक की ही प्रतिक्षा में बैठा था। श्री राम की प्रतिक्षा में बैठी अहिल्या की जिस प्रकार से श्री राम जी के आगमन के साथ ही प्रतिक्षा समाप्त हो गई थी। श्री राम के आगमन मात्र से परित्यक्ता, उपेक्षिता अहिल्या का जिस प्रकार से उद्धार हो गया था। वैसे ही पूज्य चरण जैसे असाध्यों को साध्य करने वाले कठोर तथा दुर्धर्षकर्म करने वाले युगपुरुष के दृष्टि पथ पर आने से

वियेदधुःशरदं मासमादहर्यज्ञभक्तु चादृचम्
अनाप्यं वरूणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत।।

इस मंत्र का भी उद्धार हो गया। इस मंत्र के अर्थ पर गहनता से स्वामी जी कुछ समय तक चिन्तन व मनन करते रहे और यज्ञ में बैठे–बैठे ही देश, जाति व समाज का महान कल्याण करने वाले राष्ट्र की निरापद सुख समृद्धि का कारक, राष्ट्र के गौरव, यश, तेज को बढ़ाने वाले इस दुर्लभ अत्यधिक श्रम साध्य, व्ययसाध्य होने के कारण जो दुर्लभ है अनाप्यम् जो कहीं किसी स्थान पर न होने के कारण आप्य नहीं प्राप्त होने वाला नहीं है। ऐसे ऋग्वेद के आंचल दुबके, छुपे, ज्ञान के सागर की गहराई में पड़े इस दुर्लभ शारद यज्ञ को उस ज्ञान गंगा की गहराई से बाहर निकाल आप्य सर्वजन के लिए सुलभ बनाने का संकल्प भी पूज्य चरणों ने मां गायत्री का ध्यान करते हुए, यज्ञ में उपस्थित देवजनों के समक्ष, भाव–विभोर होकर ले लिया। यज्ञ से उठने के बाद स्वामी जी ने अपना वह संकल्प मेरे सामने भी दुहराया। प्रायः कर स्वामी जी के जो मन में आता जिस भी कार्य को करने का संकल्प वे ले लेते। बाद में उसमें मेरी सहमती की मोहर अवश्य लगवा लेते। मैं अथवा मेरा परिवार भी उनके संकल्प रूपी यज्ञ में अपनी सहमति की आहुति देते हुए कह देते– इदन्नमम। हमारा यह शरीर इसमें निहित इच्छा कोई भी हमारी अपनी नहीं है। आपकी इच्छाओं में ही हमारी इच्छाएं निहित हैं। आपके संकल्पों में ही हमारे संकल्प भी विलीन हैं, समर्पित हैं। शिष्य अथवा पुत्र धारण करते हुए आपने प्रतिज्ञा करवा ली थी कि ममहृदयं ते हृदयंदधामि मम चित्तमनुचित्तंते अस्तु। तो फिर इसमें भेद कैसे संभव है। संकल्प स्वामी जी लेते और हम लोग उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए, उनके संकल्पों को पूरा करने के लिए परिवार सहित जुट जाते थे। बिना कुछ सोचे विचारे उनके संकल्पित पथ पर दिन है कि रात बिना इस को देखे, हमें इसे करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए इस बात पर भी विचार किए बिना द्रुतगति से उनके संकल्प पथ पर चल पड़ते। सोचने व विचारने का काम पूज्य चरणों का था हमारा नहीं। हमारा काम आंखें बन्द कर उनके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलना था। यहां पर भी स्वामी जी के इस संकल्प में भी हमने अपनी सहमति समर्पित कर दी। बाद में स्वामी जी ने सार्वजनिक रूप से भी यज्ञ में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं के सामने इसकी घोषणा कर दी, और अपने पत्रों द्वारा यज्ञ में अनुपस्थित बाहर से यज्ञ की सफलता के लिए प्रयत्नशील अपने प्रियजनों को भी इसकी विस्तृत सूचना दे दी। बस यहीं से इस यज्ञ की शुरुआत हुई। इसी उतंग शैलशिखर के समान महान यज्ञ से स्वर्गमय जनित वातावरण से इस दुर्लभ यज्ञ रूपी गंगा का प्रवहण प्रारम्भ हुआ। अक्तूबर 2000 को शारदीय नवरात्रे के प्रथम दिवस से दूसरे दिन तक दिन–रात अनवरत चलने वाले इस दुर्लभ यज्ञ को इसी त्रिवर्षीय यज्ञ के बीच में ही सम्पन्न किया गया। इसके बाद प्रतिवर्ष स्वामी जी इस यज्ञ को लगातार करते रहे। प्रथम शारद यज्ञ के बाद दूसरा दुर्लभ शारद यज्ञ स्वामी जी ने श्री कुन्दन लाल अग्रवाल तथा उनकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी बहन श्रीमती स्नेह अग्रवाल जी के आग्रह पर जालंधर उनके घर पर किया था। शेष यज्ञों का प्रवहण यहीं इसी शिव भूमि से होता रहा। एक बार तो अत्यधिक उत्साह व भावनाओं में भरकर स्वामी जी ने नौ दिन नौ रातों तक भी इस यज्ञ को किया। जिसमें 90 टीन घृत के लग गए थे। तब से आज तक इस यज्ञ की परम्परा यहां चली आ रही है। जब तक स्वामी जी रहे स्वामी जी इसे करते रहे। जब संसार को छोड़कर जाने लगे तो जाते–जाते इसकी बागडोर को हमसे वचन लेकर हमारे हाथों में सौंप गए। जिसे मैं आप सभी आत्मीयजनों व सहयोगियों के सहयोग व मंगलकामनाओं के सहारे आगे से भी चलाए रखने का प्रयास कर रहा हूं।

निवेदन व प्रार्थना– प्रिय बन्धुओ। अपने उद्गम स्थान से निकली पाप, सन्तापहारिणी गंगा धरती पुत्रों के कष्टों को दूर करते हुए सम्भवतः अपने लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ न हो पाती। अपनी मंजिल से कोसों दूर ही थक हार कर दम तोड़ जाती, यदि विभिन्न स्थानों से विभिन्न दिशाओं से आने वाले नदियां उसे सहारा नहीं देती। अपने अहम व अंहकार को छोड़ सर्वथा गंगा में समर्पित हो अपने आप को गंगा में विलीन कर, अपने अस्तित्व को समाप्त कर गंगा के अभियान को आगे बढ़ाने में सहयोग न करती तो, जैसे अनेकों जल स्त्रोतों की सहायता से जलाशयों की सहायता से मां गंगा का अभियान चलता रहा है और आज भी निरन्तर चल रहा है। ऐसे ही युगपुरुष, महान कर्मयोगी, त्यागी, तपस्वी सन्त पूज्य गुरू चरणों के द्वारा बड़े ही संघर्षों के साथ सघन प्रयास से देश, जाति व समाज के कल्याण के लिए, गौरवशाली, राष्ट्र के निर्माण के लिए, देश व जाति के बल व शौर्य को बढ़ाने के लिए। सब प्रकार से सब ओर से खुशहाल व समृद्ध राष्ट्र को बनाने के लिए जिस दुर्लभ शारद यज्ञ की विधा को वेद सागर की गहराईयों से निकाल कर चम्बा पवित्र रावी नदी के किनारे पर स्थित दयानन्द मठ की धरा पर शुरू किया है। पूज्य स्वामी जी का वह प्रयास, स्वामी जी का वह अभियान भी तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हम सब उस अभियान के भागी नहीं बन जाते। समर्पण की भावना से उससे जुड़ नहीं जाते। इसलिए मेरी आप सब से प्रार्थना है, आग्रह है, निवेदन है कि स्वामी जी का यह अभियान कहीं रूक न जाए। बीच में ही दम न तोड़ जाए। इसे जारी रखने के लिए, इसे आगे बढ़ाने के लिए मेरा सहयोग करें। प्रचुर मात्रा में समर्पित धन के द्वारा, अन्न के द्वारा, जन के द्वारा, सद्भावनाओं व मंगलकामनाओं के द्वारा तथा इष्ट मित्रों सहित अपने आगमन के द्वारा इससे आप सभी का भी महान कल्याण होगा। जिस प्रकार से गंगा में मिले विभिन्न जलाशयों का पानी नदी, नालों का पानी भी मानित, सम्मानित व पूजित हो जाता है, जन–जन के आस्था व विश्वास का केन्द्र हो जाता है। जिस कारण से उन जलाशयों का भी महान कल्याण हो जाता है। वैसे ही इन यज्ञों का भाग बनने से, इन यज्ञों के प्रति विभिन्न रूपों से समर्पित होने से आप सब का, हम सबका भी उद्धार हो जाएगा। महान कल्याण हो जाएगा।

आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री जी को दीपशिखा साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया

दीपशिखा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच ज्ञानोदय अकादमी हरिद्वार द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति एवं वैदिक विद्वान् महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री को माला दुशाला तथा दीपशिखा सम्मान 2019 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान गीता विज्ञान आश्रम, विष्णु गार्डन (कनखल) के सभागार में संस्था के संस्थापक एवं वरिष्ठ साहित्यकार के.एल. दीवान, अध्यक्ष डॉ. मीरा भारद्वाज, उपाध्यक्ष उमेश शर्मा, सचिव डॉ. सुशील कुमार, त्यागो अमित, महासिचव जगदीश शर्मा शेषी के द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार के.एल. दीवान ने प्रो. शास्त्री की साहित्य साधना के विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश की अनेक आदि संस्कृत हिन्दी पत्रिकाओं में आपके सैकड़ों शोध लेख प्रकाशित हुए हैं आपके उत्तम लेखों की वृहद संग्रह श्रुति मंजरी के नाम से प्रकाशित हुआ है। जिसकी संस्कृत जगत में विशेष प्रतिष्ठा है। दीपशिखा मंच की अध्यक्षा एवं कवयित्री डॉ. मीरा भारद्वाज ने कहा कि प्रो. शास्त्री के सम्मान से दीपशिखा संस्था स्वयं गौरवान्वित हुई है।

इस अवसर पर कविराज डॉ. अभयदेव शास्त्री, आचार्य राधेश्याम सेमवाल, गिरिराज पावन, तुषारकान्त पाण्डेय, धनेश्वर द्विवेदी, गांगेय कमल आदि साहित्यकारों ने प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री को माँ दीपशिखा सम्मान–2019 से सम्मानित होने पर शुभकामनाएँ एवं बधाई दी।

आठ दिवसीय ''राष्ट्रीय आर्य युवक व्यक्तित्व विकास शिविर'' का समापन

संस्कारित व अनुशासित युवा पीढ़ी से ही राष्ट्र का भविष्य – आनन्द चौहान
अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व करना सीखें युवा – अनिल आर्य

समारोह अध्यक्ष श्री आनन्द चौहान व मृदुला चौहान का अभिनन्दन करते राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, प्रवीन आर्या, प्रवीन आर्य, एस.सी.ग्रोवर व ओम सपरा।

रविवार, 16 जून 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में शिक्षाविद् डा. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में गत् 8 जून से ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर–44, नोएडा में चल रहे ''विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर'' का भव्य समापन हो गया। शिविर में 250 किशोर व युवकों ने प्रातः 4 बजे से रात्री 10 बजे तक अनुशासित दिनचर्या में रहकर नैतिक शिक्षा, योगासन, दण्ड–बैठक, लाठी, तलवार, जूडो–कराटे, बाक्सिंग, स्तूप, डम्बल, लेजियम, सन्ध्या–यज्ञ, भाषण कला, नेतृत्व कला, देश भक्ति की भावना, भारतीय संस्कृति की महानता पर शिक्षकों व वैदिक विद्वानों से बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किये।

समारोह अध्यक्ष श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि चरित्रवान आर्य युवा ही देश व विश्व को बदल सकते हैं। संस्कारित व अनुशासित युवाओं पर ही राष्ट्र व समाज का भविष्य निर्भर करता है। देश के उत्थान व प्रगति में चरित्र निर्माण शिविरों का अपना विशेष महत्व है। आर्य समाजों को इसके ओर अधिक प्रचार प्रसार पर ध्यान देना चाहिये। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के आदर्शो पर चलकर ही विश्व का कल्याण हो सकता है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द महान क्रान्तिकारी थे, उन्होंने वैचारिक सोच बदल कर लोगों के सोचने की दिशा ही बदल डाली, उनके समाज व राष्ट्र उत्थान के कार्यो को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि आज हिन्दुओं को एक जुट होने की आवश्यकता है, हिन्दू समाज के संगठित होने से राष्ट्र स्वतः मजबूत हागा। आज महर्षि दयानन्द के विचारों पर चलकर ही हम पूरे विश्व का नवनिर्माण कर सकते हैं, आज पूरे विश्व का योग दिवस मनाना उसी दिशा में एक कदम है।

मेजर जनरल (रिटा.) आर.एस.भाटिया ने कहा कि शिविर में प्रशिक्षित युवकों को अब समाज में व्यापत अन्धविश्वास, पाखण्ड व सामाजिक कुरीतियों को मिटा कर एक अच्छे समाज की संरचना का कार्य करना है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्राान्ति के अग्रदूत थे उनके स्वपनों के भारत का निर्माण युवा पीढ़ी को ही करना है।

आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि यह युवक समाज में जाकर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए कार्य करेंगे, उन्होंने युवकों से जातिवाद व प्रान्तवाद से ऊपर उठकर समाज को जोडने व सामाजिक समरसता के लिए कार्य करने का आह्वान किया। आचार्य भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली), प्रवीन आर्या के मधुर भजन हुए। प्रधान शिक्षक योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, वीरेन्द्र आर्य, प्रदीप आर्य, शिवम मिश्रा, गौरव गुप्ता, हिमांशु आर्य के निर्देशन में आर्य युवको के भव्य व आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम हुए। इस अवसर पर आर्य नेत्री मृदुला चौहान, ओम सपरा, गायत्री मीना, एस.सी.ग्रोवर, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), यशोवीर आर्य, रामकुमारसिंह, सुरेश आर्य, के.एल.राणा, अरूण आर्य, अमीरचन्द रखेजा, के. के. यादव, डा. गजराज सिंह आर्य, वीरेश भाटी, डा. डी. के. गर्ग, ओमप्रकाश पाण्डेय, विद्याभूषण आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य, वीना थरेजा, डा.आर. के.आर्य, राकेश भटनागर, अशोक जेठी, माधवसिंह आर्य, त्रिलोक शास्त्री प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

शिविर में सर्वप्रथम शिविरार्थी चन्दनदास (अरूण विहार, नोएडा), सर्वद्वितीय विभु शर्मा (बाली नगर, दिल्ली), सर्वतृतीय कुणाल (बादली, दिल्ली) पुरस्कृत किये गये। परिषद् के तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश में 20 शिविर विभिन्न स्थानों पर चल रहे हैं।

ऐमिटी कैम्पस, सैक्टर–44, नोएडा के मैदान में आर्य युवक शिविरार्थी

नवीन शिक्षा सत्र प्रारम्भ

अलीगढ़ जनपद में काली नदी के निर्मल तीर पर महात्मा स्वामी सर्वदानन्द जी द्वारा सन् 1921 में स्थापित गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय वर्तमान में एक वट वृक्ष के समान विकसित हो गया है।

महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त सहत्रों आचार्य/शास्त्री देश व विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। महाविद्यालय उत्तर प्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 16 जुलाई, 2019 को नवीन शिक्षा सत्र 2019–20 में प्रवेश हेतु 24 ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार विशाल जन समूह की उपस्थिति में प्राचार्य जीवन सिंह जी ने सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से श्री टीकम सिंह, श्री बैनामी सिंह, डॉ. रामपाल एवं अन्य आचार्यगण के अतिरिक्त स्वामी भजनानन्द, स्वामी सत्यानन्द, श्री अभय सिंह चौहान, श्री शिव कुमार शास्त्री आदि उपस्थित रहे। प्रसाद वितरण के साथ संस्कार का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

– प्राचार्य प्रो. जीवन सिंह, श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, गुरुकुल साधु आश्रम, अलीगढ़
मो.:–9719375848

यज्ञ संस्कार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आर्य समाज बक्शीपुर, गोरखपुर के तत्वावधान में आयोजित यज्ञ संस्कार प्रशिक्षण शिविर जो दिनांक 22 तारीख से प्रारम्भ होकर दिनांक 28 जून, 2019 को समापन हुआ। जिसमें जिला आर्य प्रतिनिधि शिविर में भाग लिए प्रशिक्षणार्थ को प्रमाण पत्र देते हुए और उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को आशीर्वाद के 2 शब्दों के क्रम में उन्होंने शिविर की सफलता पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे ही शिविर सारे आर्य समाजों में अगर आयोजित हो तो हमारे संस्कार और आर्य समाज के प्रति महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज को वेदों के तरफ बढ़ाने का जो संकल्प लिया था उसको प्राप्त करने में हम सफल हो सकेंगे।

टिटौली की बेटियों ने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, आश्रम, रोहतक (हरि.) में किया पौधारोपण

24 जुलाई 2019 (टिटौली) : आज टिटौली के स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में बेटियों ने पौधरोपण किया। अंग्रेजी के अध्यापक प्रदीप कुमार ने वृक्षारोपण से पर्यावरण पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि पौधारोपण परोपकार का सबसे बड़ा माध्यम है। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय टिटौली ने पौधगिरी के कार्यक्रम के तहत पौधारोपण किया। प्रदीप कुमार ने बताया कि बच्चे, पौधे को अपनी पसंद के हिसाब से नाम दे रहे हैं, कुछ देश के महान व्यक्तित्वों के नाम पर तो कुछ हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के नाम पर। पौधे लगाने वाले हर छात्र ने अगले तीन सालों तक इसका ख्याल रखने का संकल्प लिया।

अंजू डबास प्रवक्ता रसायन विज्ञान ने बताया कि छात्र को हर 6 महीने में एप पर अपने पौधे के साथ एक सेल्फी अपलोड करनी है। विज्ञान अध्यापक सुधीर कौशिक ने कहा कि तीन साल में पौधा स्वयं जीवित रहने की स्थिति में होगा और 10 वर्षों में यह फूल, फल, छाया देना शुरू कर देगा। इसके साथ ही इससे ग्लोबल वार्मिग रोकने में भी मदद मिलेगी। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बताया कि आश्रम में लगभग 300 पेड़–पौधे हैं। जिनमें से 50 पौधों का जन्मदिन पिछले तीन वर्षों से प्रतिवर्ष रक्षाबंधन पर मनाया जाता है, क्योंकि ये पौधे रक्षाबंधन पर ही लगाए गए थे। आज बच्चों ने कुछ पौधे लगाए हैं इनका भी जन्मदिन हर वर्ष मनाया जाएगा। जन्मदिन मनाने के पीछे कारण बस ये रहता है कि हम उसकी परवरिश के प्रति ज्यादा सावधान रहने लगते हैं, परिणामस्वरूप पौधा ठीक–ठाक रखा जाता है व फल तथा फूल के अतिरिक्त जीवन के लिए अमूल्य ऑक्सीजन भी देने लायक बन जाते हैं। इस कार्यक्रम में सोनिका हिंदी अध्यापिका के अतिरिक्त प्रदीप नैन, धर्मदेव, संतोष, बिजेंद्र, मुस्कान बिंदिया, काफी, सिवानी, तन्नू, वर्षा, अंजली, हन्नी आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन

दिनांक : 27 सितम्बर (शुक्रवार), 2019
समय : प्रातः 10 से 2.30 बजे तक
स्थान : तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली
(कार्यक्रम के पश्चात् भोजन की व्यवस्था है)

सभी आर्य बन्धु सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

–: निवेदक :–

ठा. विक्रम सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी

डॉ. आनन्द कुमार
राष्ट्रीय महासचिव
राष्ट्र निर्माण पार्टी

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज का प्रतिनिधि मंडल 22 जुलाई, 2019 को अमेरिका रवाना

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बताया कि अमेरिका में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन में भारत से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज का प्रतिनिधि मंडल 22 जुलाई को अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा दिल्ली से अमेरिका के लिए रवाना हुआ। स्वामी जी के साथ वैदिक विरक्त मण्डल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी

प्रणवानंद जी, वैदिक मिशन मुम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य सोमदेव जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व संयोजक बहन प्रवेश आर्या भी शामिल रही। ये सब आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के विशेष निमंत्रण पर शिकागो में 25 जुलाई से 28 जुलाई, 2019 तक आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में वक्ता के रूप में भाग लेंगे।

'लीला' सीरियल पर प्रतिबंध लगाने के लिए जन्तर–मन्तर पर किया गया धरना प्रदर्शन

'लीला' सीरियल को सरकार अविलम्ब प्रतिबन्धित करे

– स्वामी आर्यवेश

शुक्रवार 12 जुलाई 2019, राष्ट्र निर्माण पार्टी के तत्वावधान में एम. जे. अकबर के बेटे प्रयाग अकबर द्वारा लिखित "लीला" पुस्तक पर आधारित लीला सीरियल पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर नई दिल्ली के जन्तर मंतर पर प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा की आर्य शब्द का तात्पर्य श्रेष्ठ है। भारतीय संस्कृति अपने उच्च आदर्शों के कारण सारे विश्व की संस्कृतियों से महान है। हमारी संस्कृति को विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। संस्कृति किसी भी देश, जाति या समुदाय की आत्मा होती है और संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। संस्कृति का सामान्य अर्थ होता है – संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि आदि। संस्कृति का सम्बन्ध मानव जीवन मूल्यों से होता है। भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र आध्यात्मिकता है और आध्यात्मिकता भी वेद पर आधारित। वेदों में मानव को उन्नत करने, सुसंस्कृत करने और हर समस्या का समाधान मिलता है। स्वामी जी ने कहा इतने उच्च आदर्शों वाली हमारी भारतीय प्राचीन संस्कृति पर आक्षेप लगाकर इसको तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत कर और अनर्गल गलत इतिहास बताकर हमारी संस्कृति को बदनाम करने किसी भी प्रयास को सहन नहीं किया जायेगा। हमारी माँग है कि इस प्रकार से भारतीय संस्कृति को बदनाम करने वाले सीरियल को अविलम्ब प्रतिबन्धित किया जाये।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा की आज हिन्दू भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है उसे सहन नहीं किया जायेग। उन्होंने कहा कि हम राष्ट्र व्यापी आंदोलन चलायेगे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ आनंद कुमार ने किया।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. आनन्द कुमार ने कहा कि 'लीला' सीरियल जिस 'लीला' नाम की पुस्तक पर आधारित है उस पुस्तक को तथा 'लीला' सीरियल को अविलम्ब बन्द किया जाये, क्योंकि इसमें हिन्दू धर्म तथा भारतीय संस्कृति को बदनाम करने का षड्यन्त्र रचा गया है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा की लीला सीरियल आर्यो की पुरातन संस्कृति को बदनाम करने की साजिश है इसे सहन नहीं किया जायेगा उन्होंने कहा की आर्य समाज भारतीय संस्कृति का रक्षक है लीला सीरियल व पुस्तक पर प्रतिबंध लगाया जाए। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि आर्य यहाँ के मूल निवासी थे और वेद गौ हत्यारे को सीसे की गोली से मारने का आदेश देते है। आर्य लोग गाय के उपासक व देवता मानते थे। वेद भी नारी सम्मान की बात करते है इस पुस्तक में तोड मरोड़ कर आर्यो को बदनाम करने का दुस्साहस किया गया है जो निन्दनीय है।

इस अवसर पर शिव कुमार मदान, अरुण आर्य, अरविन्द मिश्रा, प्रवीन आर्या, धर्मवीर पहलवान, देवदत्त आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि उपस्थित थे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।